OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025) ISSN : Applied

नशाखोरी की समस्याः समाजशास्त्रीय नजरिए से एक विश्लेषण

रोहित कुमार यादव
शिक्षक, सामाजिक विज्ञान, दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, राजकोट, गुजरात
मोबाइल : 8545832419, ईमेल : rohityd985@gmail.com

आज का समाज नशे की गिरफ्त में इतना जकड़ा हुआ है कि यह समस्या न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि परिवार की नीव और सामाजिक संरचना को भी हिला रही है। भारत में नशाखोरी की जड़ें प्राचीन परंपराओं में हैं, जहां मादक पदार्थों का इस्तेमाल धार्मिक अनुष्ठानों या सांस्कृतिक रिवाजों तक सीमित था। लेकिन आधुनिक दौर में यह एक अनियंत्रित महामारी बन चुकी है, जो स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और सामाजिक सद्भाव को चोट पहुंचा रही है। भारत की भौगोलिक स्थिति इसे ड्रग्स के व्यापार के लिए संवेदनशील बनाती है, क्योंकि यह दो प्रमुख ड्रग उत्पादक क्षेत्रों के बीच स्थित है। इन क्षेत्रों से आने वाले मादक पदार्थ देश में उपभोक्ताओं और तस्करों के बीच एक पुल बनाते हैं। आधुनिक समाज में शराब, हेरोइन, कोकीन और सिंथेटिक ड्रग्स का बढ़ता चलन स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों के साथ-साथ सामाजिक विघटन को भी बढ़ावा दे रहा है। नशाखोरी से घरेलू हिंसा, अपराध और गरीबी जैसी समस्याएं जन्म ले रही हैं, और यह युवाओं के भविष्य को भी खतरे में डाल रही है। नशे की लत से प्रभावित व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से कमजोर होता है, बल्कि मानसिक विकारों का शिकार भी बनता है, जो समाज पर बोझ बन जाता है।

नशाखोरी की समस्या को समझने के लिए हमें समाजशास्त्रीय नजरिए से देखना होगा, जहां यह एक सामाजिक बीमारी के रूप में उभरती है। समाजशास्त्र हमें बताता है कि नशा कोई व्यक्तिगत कमजोरी नही है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारकों का नतीजा है। युवा पीढ़ी इस समस्या का सबसे बड़ा शिकार है, क्योंकि करियर का दबाव, परिवार की अपेक्षाएं और सामाजिक दबाव उन्हें तनावग्रस्त कर देते हैं। ऐसे में नशा एक आसान रास्ता लगता है, जो तात्कालिक राहत देता है लेकिन लंबे समय में सब कुछ छीन लेता है। युवाओं में एक गलत धारणा भी है कि नशा उच्च सामाजिक स्तर का प्रतीक है, जैसे सिगरेट के धुंए से स्टेटस बढ़ता हो या पार्टियों में शराब से रुतबा। लेकिन यह धारणा उन्हें गुमराह करती है, और वे नशे की चपेट में आ जाते हैं। समाज में फैली यह समस्या परिवारों को तोड़ रही है, जहां नशेड़ी व्यक्ति घर की शांति भंग करता है और अपराध की ओर मुड़ जाता

OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025) ISSN : Applied

है। समाजशास्त्र हमें सिखाता है कि नशाखोरी सामाजिक असमानता से भी जुड़ी है, जहां गरीब और मध्यम वर्ग के लोग तनाव से बचने के लिए इसका सहारा लेते हैं।

नशे की लत क्या है? यह वह स्थिति है जहां व्यक्ति मादक पदार्थों पर इतना निर्भर हो जाता है कि उसका दैनिक जीवन प्रभावित होता है। यह लत न केवल शारीरिक रूप से कमजोर करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी बिगाड़ती है। व्यक्ति नशे के बिना सामान्य महसूस नही करता, और इससे छुटकारा पाने की कोशिश में वह और गहरे गड्ढे में गिर जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह लत एक 'प्रभाव तरंग' की तरह है, जो व्यक्ति से शुरू होकर परिवार और समाज को प्रभावित करती है। नशेड़ी व्यक्ति में चिड़चिड़ापन बढ़ता है, रिश्ते टूटते हैं, और अपराध बढ़ते हैं। कई बार यह लत इतनी गहरी हो जाती है कि व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है। समाज में यह समस्या परिवारों को बिखेर रही है, जहां नशेड़ी व्यक्ति घर की खुशियां छीन लेता है। समाजशास्त्र हमें बताता है कि नशाखोरी सामाजिक अलगाव से भी जुड़ी है, जहां व्यक्ति अकेलेपन से बचने के लिए इसका सहारा लेता है।

नशे के आदी होने के पीछे कई कारण हैं, जो व्यक्ति को इस दलदल में धकेलते हैं। सबसे बड़ा कारण परिवार की व्यस्तता है, जहां माता-पिता का ध्यान बच्चों पर कम होता है, और बच्चे अकेलेपन का शिकार बनते हैं। परिवार में झगड़े और कलह व्यक्ति को नशे की ओर धकेलते हैं। मानसिक तनाव भी एक प्रमुख कारण है, जहां व्यक्ति अपनी समस्याओं से भागने के लिए नशे का सहारा लेता है। बेरोजगारी नशाखोरी की जड़ है, क्योंकि खाली दिमाग नकारात्मक विचारों को जन्म देता है। शारीरिक कमजोरी या पढ़ाई में पिछड़ना भी बच्चों को नशे की ओर ले जाता है। मानसिक बीमारियां जैसे तनाव और अवसाद व्यक्ति को नशे का आदी बनाती हैं। परिवार या दोस्तों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है, जहां व्यक्ति अपने आदर्शों की नकल में नशा शुरू कर देता है। अकेलापन नशे को आमंत्रित करता है, और लोग सोचते हैं कि नशा तनाव दूर करेगा, लेकिन यह सब कुछ बर्बाद कर देता है। दवाओं की गलत आदत भी नशे की ओर ले जाती है, जहां दर्द निवारक दवाएं लत बन जाती हैं। पुरानी दुखद यादें भूलने के लिए लोग नशे का सहारा लेते हैं। शारीरिक तंदुरुस्ती की गलत धारणा भी नशे की ओर धकेलती है। परिवार में भेदभाव बच्चे को नशे की ओर ले जाता है। मीडिया और विज्ञापनों का प्रभाव युवाओं को नशे की ओर आकर्षित करता है।

नशाखोरी के प्रभाव भयावह हैं। यह व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक सेहत को बर्बाद करती है, और समाज पर बोझ बनती है। नशे से होने वाली मौतें और अपराध बढ़ रहे हैं। युवा पीढ़ी का भविष्य खतरे में है, और इससे परिवार टूटते हैं। समाज में अपराध की दर बढ़ती है, और आर्थिक नुकसान होता है। नशाखोरी से जुड़ी बीमारियां जैसे कैंसर और हृदय रोग बढ़ते हैं। समाजशास्त्र हमें बताता है कि नशाखोरी सामाजिक विघटन का कारण है, जहां रिश्ते टूटते हैं और अपराध बढ़ते हैं। सरकार नशाखोरी से निपटने के लिए कई कदम उठा रही है। जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, और पुनर्वास केंद्र स्थापित किए गए हैं। कानून सख्त बनाए गए हैं, जो नशे के व्यापार पर रोक लगाते हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग से ड्रग्स की तस्करी रोकी जा रही है। लेकिन चुनौतियां हैं, जैसे बुनियादी ढांचे की

OPINION TODAY
Peer Reviewed, Refereed Quarterly Journal
Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025) ISSN : Applied

कमी और नए पदार्थों का आना। सरकार को कानून सख्त करने, अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने और जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। किसानों के लिए वैकल्पिक फसलें प्रोत्साहित की जाएं। तकनीक से निगरानी बढ़ाई जाए। नशाखोरी से लड़ने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाए जाते हैं, जैसे तंबाकू निषेध दिवस और नशा निवारण दिवस। इन पर सामूहिक कार्यक्रमों से जागरूकता फैलाई जाए।

निष्कर्ष में, नशाखोरी एक सामाजिक अभिशाप है जो व्यक्ति, परिवार और समाज को नष्ट करती है। सरकार के प्रयास सराहनीय हैं, लेकिन सामाजिक सहयोग जरूरी है। जागरूकता और सख्त कानून से हम इस समस्या से मुक्त हो सकते हैं।

संदर्भ

1. मेयर्ड आरडी, हैरिस आरए, शुक्ल एमए। शराब पर निर्भरता को प्रभावित करने वाले आनुवंशिक कारक।
2. केन्डल के एस, नेल्सनसी, हीथ एसी, केसलर आरसी, ईव्स एलजे। महिलाओं में शराब की लत का एक जुड़वां परिवार का अध्ययन।
3. क्रो जेआर। शराबबंदी के आनुवंशिकी।
4. मेल्कम एस.एम। द जेनेटिक्स ऑफ एडिक्शन : क्या एडिक्शन एक बीमारी है?
5. माकोस ए.सी., बह्न एस.जे। नियंत्रण सिद्धांत और किशोर नशीली दवाओं का उपयोग।
6. स्पियर एल.पी। किशोरावस्था का मस्तिष्क और आयु संबंधी व्यवहार संबंधी अभिव्यक्तियां।
7. माथुर, एस.एम। शिक्षा मनोविज्ञान।
8. भागवत, महेश। आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण मापन।
9. लाल, डॉ. जे.एन। विकासात्मक मनोविज्ञान।